होमवर्क बनाम हाउसवर्क | कुछ बच्चे दोनों को कैसे सम्भालते हैं

शान्ता के.

हर बच्चा सीख सकता है – इस विषय को दिसम्बर 2019 में तय किया गया था। उस समय चर्चा में भाग लेते हुए मेरे दिमाग़ में जो बच्ची आई थी उसे मैं हर सुबह देखती हूँ। तब मुझे लगा कि मैं पत्रिका के इस अंक में अपना योगदान दे सकती हूँ।

मैं जहाँ रहती हूँ, वह एक नया परिसर है जिसमें बहुत सारे घर निर्माणाधीन हैं। हर सुबह अपनी रसोई में काम करते हुए मैं इस परिवार को देखती हूँ, जो भवन-निर्माण मज़दूरों के समूह का हिस्सा है। परिवार एक छोटे से अस्थायी शेड में रहता है। उनका जीवन काफ़ी व्यस्त है जो सुबह छह बजे शुरू होता है और रात में नौ बजे तक समाप्त होता है। *जल्दी सोना और जल्दी उठना* – इस परिवार का नियम है। परिवार की मुखिया एक महिला है जो निर्माण-स्थल पर एक मज़दूर के रूप में काम करती है। उसे दैनिक मज़दूरी मिलती है। उसके तीन बच्चे हैं, दो लड़के और एक लड़की। लड़की का नाम रेखा है। महिला का भाई भी निर्माण-स्थल पर ही चौकीदार का काम करता है और अपने परिवार के साथ पड़ोस में ही रहता है। उसकी भी तीन लड़कियाँ हैं, उनमें से सबसे बड़ी लड़की रेखा के साथ स्कूल जाती है और दोनों कक्षा एक में हैं।

मैं, एकल माँ की इस सबसे छोटी बच्ची रेखा की दिनचर्या से काफ़ी प्रभावित हूँ। वह सुबह क़रीब छह बजे उठती है, नहाती है, अपने स्कूल की यूनिफ़ॉर्म पहनती है, बर्तन और कपड़े धोने में अपनी माँ की मदद करती है, कपड़े सूखने के लिए बाहर डालती है और फिर नाश्ता करके स्कूल जाने के लिए उसी परिसर के अपने अन्य दोस्तों का इन्तज़ार करती है। पाँच बच्चे आते हैं और वे सब एक साथ स्कूल जाते हैं। स्कूल में मध्यान्ह भोजन दिया जाता है, इसलिए दोपहर के भोजन को लेकर कोई चिन्ता नहीं है; फिर वह शाम को चार बजे तक उसी ऊर्जा के साथ घर लौटती है। उनका नहाने, धोने और खाना बनाने का सारा काम एक खुली जगह में होता है, जो कि मेरी रसोई की खिड़की से दिखाई देती है।

मैंने सप्ताहांत में रेखा से बात की। मैंने यह जानने की कोशिश की कि उसकी पढ़ाई की क्या दिनचर्या है, अपने स्कूल के काम वह कैसे निपटाती है, होमवर्क करने में उसकी मदद कौन करता है आदि। मुझे जो जानकारियाँ मिलीं, वे इस प्रकार हैं।

रेखा लगभग 8 साल की है और मरसूर, अनेकल के सरकारी स्कूल में पढ़ती है। वहाँ शिक्षण का माध्यम द्विभाषी है, कन्नड़ा और अँग्रेज़ी दोनों का उपयोग कक्षा में किया जाता है। कक्षा में उसके विषय कन्नड़ा, अँग्रेज़ी, पर्यावरण अध्ययन और गणित हैं। उसके पसन्दीदा विषय पर्यावरण अध्ययन और गणित हैं। जब मैंने उससे पूछा कि वह वर्तमान में पर्यावरण अध्ययन का कौन-सा पाठ पढ़ रही है तो उसका जवाब था 'सजीव प्राणी क्या हैं?'

सामान्यतः हमारी यह धारणा होती है कि लड़के गणित में अच्छे होते हैं और लड़कियाँ सामाजिक अध्ययन और भाषाओं में, लेकिन रेखा इस रूढ़िबद्ध धारणा को झूठा साबित करती है; उसे गणित विषय बहुत आसान लगता है, जबकि उसकी कक्षा के कुछ लड़कों को यह कठिन लगता है। वह होमवर्क में अपने बड़े भाई की मदद लेती है, लेकिन ज़्यादातर ऐसा होता है कि भाई का अपना होमवर्क ही बहुत होता है, तो इसके लिए रेखा ने एक व्यावहारिक विकल्प ढूँढ़ निकाला है - सुबह जल्दी स्कूल जाना और अपनी सहेली की नोटबुक से नकल करना। होमवर्क हर दिन दिया जाता है और वह अपने घर के कामों के कारण इसे पूरा नहीं कर पाती है। इसलिए वह दोस्त की नोटबुक से नकल करने के लिए मजबूर है ताकि कक्षा में सज़ा से बच सके। उसके दोस्त के जवाब कितने सही होते हैं, यह तो शिक्षक ही जानें!

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रवासी मज़दूर समय-समय पर एक जगह से दूसरी जगह जाते रहते हैं, उनके बच्चे सुबह-शाम घर के कामों में व्यस्त रहते हैं, इस सबके बीच स्कूल भी जाते हैं। यह सब देखकर मैं सोचने लगी : वे *सीखने* और अपना होमवर्क करने के लिए समय कैसे और कब निकालते हैं? डिजिटल इण्डिया के इस युग में, जब इंटरनेट पर सब कुछ उपलब्ध है, धनी परिवारों के बच्चों को अपनी पढ़ाई में अपने माता-पिता से किसी भी तरह की सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती। लेकिन पहले से ही वंचित बच्चे, समाधान के लिए कहाँ जाएँगे, ज्ञान की अपनी भूख को कैसे तुष्ट करेंगे? स्मार्टफोन पर उपलब्ध सभी ऐप्स को इंटरनेट कनेक्टिविटी की आवश्यकता होती है, लेकिन फोन और इंटरनेट के लिए पैसे कौन भरेगा?

जिन स्कूलों में बच्चों की पढ़ाई और उससे जुड़े कार्यों जैसे कि होमवर्क आदि में परिवार वाले कोई सहायता नहीं कर सकते, वहाँ के शिक्षकों को इन बच्चों के प्रति संवेदनशील होना

चाहिए, कक्षा के दौरान पर्याप्त सहायता प्रदान करनी चाहिए, कक्षा-कार्य अधिक करवाना चाहिए और होमवर्क पर इतना ज़ोर देने की बजाय उसे हटा देना चाहिए।

दिलचस्प बात यह है कि इन सभी बाधाओं के बावजूद रेखा जैसे बच्चे स्कूल जाते हैं, सीखते हैं और मेरी तरह काम करने की आकांक्षा रखते हैं। उसने कहा कि वह एक कार्यालय में काम करना चाहती है न कि अपनी माँ की तरह ईंटें ढोना। उसकी माँ की भी यही इच्छा है, जो हमेशा कहती है, 'मैं चाहती हूँ कि मेरे तीनों बच्चे शिक्षा पाएँ और *ऑफिस* में काम करें।'

रेखा इसी उत्साह और आकांक्षा के साथ प्रतिदिन स्कूल में पढ़ने जाती है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि शिक्षक और समुदाय ऐसा माहौल बनाएँ जहाँ रेखा जैसे बच्चों को सीखने और ज्ञान प्राप्त करने का और बाद में आजीविका हासिल करने का अवसर मिले। तब हम दृढ़तापूर्वक यह कह सकते हैं कि *हर बच्चा सीखना चाहता है* और अगर अवसर दिया जाए तो *हर बच्चा सीख सकता है* ।

शान्ता के. पिछले आठ साल से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ कार्यरत हैं और वर्तमान में 'अनुवाद पहल एवं प्रकाशन' का कार्यभार सम्भाल रही हैं। वे मानव संसाधन प्रबन्धन में स्नातक हैं और सामाजिक विज्ञान के नज़रिए से अपने चारों ओर के जीवन का अवलोकन करने में रुचि रखती हैं।
उनसे shantha.k@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

अच्छा पढ़ाना सीखने का एक बड़ा हिस्सा है यह पहचानना शुरू करना कि कौन-से प्रतीकों या संकेतों को विद्यार्थी समझते हैं और फिर उनमें से सबसे प्रभावशाली प्रतीकों का चुनाव कर, उनका इस्तेमाल करना। जब विद्यार्थी मेरी कक्षा में दिलचस्पी लेते हुए प्रतिक्रिया देने लगते हैं (या मैं ऐसे प्रतीक या संकेत देखने लगता हूँ जो मेरे ख़याल में दिलचस्पी का प्रतिनिधित्व करते हैं) तो वह मेरे स्वत्व को आकार देने लगता है। मैं स्वयं को एक क़ाबिल और गर्वित शिक्षक के रूप में देखने लगता हूँ। हम हमेशा संकेतों या प्रतीकों के माध्यम से अन्तःक्रिया करते रहते हैं और इस प्रक्रिया का अध्ययन सीखने-सिखाने के लिए महत्त्वपूर्ण अन्तर्दृष्टियाँ प्रदान करता है।

- अमन मदान, 'आदिवासी स्कूली शिक्षा में स्वत्व और पहचान का पुनर्निर्माण', पेज 3